Tender Heart High School, Sec. 33-B, CHD.

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-15 'सिंगापुर की यात्रा') -3
(पृष्ठ-127)
पुस्तक- नवतरंग- 7 शेष भाग---

प्यारे बच्चो, सुप्रभात!

आज हम पाठ-15 'सिंगापुर की यात्रा' का शेष भाग पढ़ेंगे।

सब बच्चे अपनी पुस्तक का पृष्ठ-127 खोलें। अब मैं आपको 'सिंगापुर की यात्रा' पाठ को आगे पढ़ाने से पहले थोड़ा भाग (हिस्सा) पिछले सप्ताह का पढ़ लेते हैं।

बच्चो! पाठ के पिछले भाग में हमने पढ़ा था कि सिंगापुर एक छोटा देश है। वहाँ के लोग अपने देश से बहुत प्यार करते हैं। सिंगापुर समुद्र पर कृत्रिम भूमि का निर्माण करके अपनी आज़ादी के बाद से अपना क्षेत्रफल सैकड़ों वर्गमील बढ़ा चुका है।

चूँकि सिंगापुर में प्राकृतिक संसाधनों का अभाव है और पर्यटन के लिए भी कुछ खास नहीं है, इसलिए उन्होंने आधुनिक तकनीक से सब कुछ स्वयं बना लिया है। उदाहरण के लिए, एक विशाल गुंबद में उन्होंने फूलों का विशाल बगीचा बना दिया है। जंगल नहीं है तो एक पार्क को जंगल का रूप देकर उसे 'नाइट सफ़ारी' का नाम दे दिया है। हम वहाँ गए तो पता चला कि वहाँ के अधिकतर वन्य प्राणी भारत से ही प्राप्त किए गए हैं। विदेशी पर्यटक उन्हें देखने के लिए उत्सुकता से कतार बाँधे खड़े रहते हैं। मार्केटिंग और सूझ-बूझ का यह संगम सिंगापुर को प्रतिवर्ष लाखों डॉलर की आय करवाता है। भारत के प्रति गर्व का अनुभव भी हुआ कि हमारा देश प्राकृतिक और मानव-निर्मित अजूबों का खज़ाना है। कदम-कदम पर ऐसे स्थान हैं जिनसे हमारे देश को भरपूर कमाई हो सकती है। किंतु अभी भी हम पर्यटन में उतना आगे

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE 16.12.24
PAGE No. 2

कक्षा - सातवीं शिक्षिका - सुमन शर्मा
विषय - हिंदी साहित्य (पाठ-15 'सिंगापुर की यात्रा')

नहीं निकल सके हैं। कारण यह है कि जो सुविधाएँ पर्यटकों को आकर्षित करती हैं, उनके प्रति हमारा रवैया है - सब चलता है। मौका मिलते ही मेट्रो और बसों पर चिपके स्टीकर कुरेदना और उखाड़ने की कोशिश करना हमारे समाज के एक बड़े हिस्से का 'टाइम-पास' है। ऐतिहासिक इमारतों पर अपना नाम कुरेदकर उसे बदरंग बनाते हुए कुछ लोग एक पल के लिए भी विचार नहीं करते। ये उदाहरण बताते हैं कि हमारी शिक्षा को प्रत्येक भारतवासी में अपने देश पर गर्व करने की जिस भावना और अनुशासन का विकास करना चाहिए था, वह नहीं हो सका है। इस हमारी धरोहर को सुरक्षित रखने के लिए अपने नागरिकों को जागरूक करना आवश्यक है।

वहीं दूसरी ओर सिंगापुर में इस बात पर सबसे अधिक ध्यान दिया जाता है कि बच्चों में नेतृत्व क्षमता, देश-प्रेम, नागरिकता आदि मूल्यों का विकास ज़रूर हो। सिंगापुर के लिए इन मूल्यों का विकास करना अति आवश्यक है क्योंकि वह बहुत छोटा देश है। उसका क्षेत्रफल दिल्ली से भी आधा है और उस देश की कुल आबादी ही 35 लाख है। यदि वे अपने नागरिकों में अपने देश के प्रति सम्मान और प्रेम विकसित नहीं कर सके तो एक दिन उस देश का वजूद ही खतरे में पड़ जाएगा। यह भी गौर करने लाइक बात है कि कक्षा 12 के बाद वहाँ के प्रत्येक छात्र को 2 वर्ष अनिवार्य रूप से सेना में सेवा करनी होती है।

सिंगापुर की शिक्षा-व्यवस्था अनुशासन को बहुत महत्व देती है। वहाँ लड़कों को शारीरिक दंड देना स्वीकार्य है। वहाँ के शिक्षकों के अनुसार, गलती करने पर यदि सज़ा नहीं दी जाएगी तो बच्चे को उससे लाभ के स्थान पर नुकसान अधिक होगा।

वहाँ की शिक्षा देशप्रेम को जिस प्रकार बढ़ावा देती है, इसका उदाहरण देते हुए अक्षय कुमार दीक्षित कहते हैं सिंगापुर में हमें मिलने वाले लगभग सभी लोगों ने बिना किसी

(पृष्ठ-2)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

कक्षा- सातवीं शिक्षिका- सुमन शर्मा
विषय- हिंदी साहित्य (पाठ-15 'सिंगापुर की यात्रा')

झिझक के हमें प्रेरित किया कि हम सिंगापुर में अवश्य घूमें-फिरें और जी भरकर 'शॉपिंग' करें और सिंगापुर को लाभ पहुँचाएँ। यह उदाहरण काफ़ी-कुछ स्पष्ट कर देता है।

इस प्रकार बच्चो! लेखक अपने मित्रों के साथ सिंगापुर में एक सप्ताह रुके और वहाँ उस देश के बारे में बहुत कुछ जाना और हम सबके समक्ष प्रस्तुत किया है। अब मैं आपको कुछ कठिन शब्दों के अर्थ बताती हूँ।

शब्दार्थ :-

संसाधन - स्रोत
अटके - फँसे
फुटपाथ - पैदल पथ
पर्यटकों - सैलानियों
उदासीन - विरक्ति, तटस्थता
बदरंग - भद्दा, खराब हो गया हो
नेतृत्व क्षमता - नेता मार्गदर्शन एवं संचालन करना
झिझक - झेंप, हिचक
प्रेरित - प्रोत्साहित
विशिष्ट - विशेष, खास
कृत्रिम - नकली
पर्यटन - भ्रमण, यात्रा
संगम - मिलन
अजूबा - अनूठा, अद्‌भुत, हैरान में डालने वाला
कुरेदना - खुरचना
भावना - विचार, मनोभाव
आवश्यक - ज़रूरी, अनिवार्य
व्यवस्था - इंतज़ाम
विकास - तरक्की
स्वीकार्य - ग्रहण करने के योग्य

बच्चो! अब मैं आपको गृहकार्य करने को दे रही हूँ। यह पाठ यहाँ समाप्त हुआ।

गृहकार्य :- सभी बच्चे कराए गए शब्दार्थ को अपनी अभ्यास-पुस्तिका में लिखेंगे और याद करेंगे।

धन्यवाद।

(अंतिम पृष्ठ-3)

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner